International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research

Website: www.ijhslr.org/

E-mail: editorinchief@ijhslr.org

वैश्वीकरण के युग में जैन धर्म की महत्ता: उत्तर प्रदेश के बदायूँ जनपद के बिल्सी नगर के जैन समाज का एक अध्ययन

पंकज कुमार सिंह

समाजशास्त्र विभाग,

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिल्सी, बदायूँ (उत्तर प्रदेश)

**Corresponding author email:* pankajsociohdi@rediffmail.com

Received: 15 July 2025, revised: 09 October 2025, Accepted: 19 December 2025, Available Online: 16 December, 2025

सारांश (Abstract)

वैश्वीकरण ने विश्व को पहले की तुलना में कहीं अधिक परस्पर जोड़ दिया है, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक एकरूपता (Homogenization), तीव्र उपभोक्तावाद और तीव्र आर्थिक प्रतिस्पर्धा का उदय हुआ है। इस संक्रमणकालीन युग में, जैन धर्म जैसे प्राचीन दर्शन एक सशक्त वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो शांति, संधारणीयता (Sustainability) और नैतिक जीवन पद्धति को बढ़ावा देते हैं। जैन धर्म के मूल सिद्धांत–अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद–आज के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, जैन धर्म की अहिंसा का विस्तार केवल शारीरिक क्षति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पारिस्थितिक (Ecological) और मनोवैज्ञानिक कल्याण भी सम्मिलित है। जहाँ वैश्वीकरण भौतिकतावाद और अति-उपभोग को बढ़ावा देता है, वहीं 'अपरिग्रह' की अवधारणा न्यूनतमवाद (Minimalism) और अतिरिक्त संसाधनों के प्रति अनासक्ति को प्रोत्साहित कर इसे चुनौती देती है। इसी प्रकार, सांस्कृतिक संघर्षों और वैचारिक कट्टरता से चिह्नित वैश्विक परिवेश में 'अनेकांतवाद' सहिष्णुता और सत्य की बहुलता को स्वीकार करने की प्रेरणा देता है। प्रस्तुत शोध पत्र समाजशास्त्रीय लेंस के माध्यम से इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे यह प्राचीन प्रज्ञा आधुनिक वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर सकती है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले के बिल्सी नगर के जैन समुदाय के एक 'समाजशास्त्रीय केस स्टडी' पर आधारित है। संख्यात्मक रूप से अल्पसंख्यक होने के बावजूद, बिल्सी का जैन समाज अपनी धार्मिक

परंपराओं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह पत्र इस तथ्य को रेखांकित करता है कि जैन धर्म अपनी मूल दार्शनिक नींव को सुरक्षित रखते हुए वैश्विक प्रभावों के साथ अनुकूलन (Adaptation) कर किस प्रकार आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।
की-वर्ड्स (Keywords): वैश्वीकरण, जैन धर्म, अहिंसा, अल्पसंख्यक समुदाय, समाजशास्त्रीय केस स्टडी, बिल्सी, उत्तर प्रदेश।

1. प्रस्तावना (Introduction)

वैश्वीकरण (Globalization) एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक एकीकरण, तकनीकी प्रगति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक रूपांतरण समाहित है। जहाँ एक ओर इसने वैश्विक जुड़ाव और विकास को सुगम बनाया है, वहीं दूसरी ओर इसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक क्षरण (Cultural Erosion), नैतिक संकट और पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, वैश्वीकरण अक्सर 'स्थानीय' मूल्यों को 'वैश्विक' प्रवाह में विलीन करने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में, धार्मिक परंपराएं अक्सर नैतिक मार्गदर्शन और सांस्कृतिक स्थिरता के स्रोत के रूप में कार्य करती हैं।

जैन धर्म, भारत के प्राचीनतम जीवित धर्मों में से एक है, जो कठोर नैतिक अनुशासन, आध्यात्मिक मुक्ति और जीवन के सभी रूपों के प्रति सम्मान पर बल देता है। यद्यपि भारत की कुल जनसंख्या में जैन धर्मावलंबियों का प्रतिशत अल्प है, किंतु भारतीय दर्शन, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर इनका प्रभाव अत्यंत व्यापक और गहरा है। समाजशास्त्रीय रूप से, जैन समुदाय एक ऐसा **'लघु समुदाय' (Little Community)** प्रस्तुत करता है जो अपनी सुदृढ़ आंतरिक एकजुटता और नैतिक संहिता के माध्यम से बाहरी परिवर्तनों का सामना करता है।

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले के **बिल्सी** नगर के जैन समाज पर केंद्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि स्थानीय स्तर पर जैन धर्म वैश्वीकृत विश्व में अपनी प्रासंगिकता और महत्ता को किस प्रकार बनाए रखता है। यह शोध इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि क्या वैश्विक प्रभाव स्थानीय धार्मिक पहचान को कमजोर कर रहे हैं, या जैन सिद्धांतों की सार्वभौमिक प्रकृति उन्हें आधुनिक चुनौतियों के विरुद्ध और अधिक सशक्त बना रही है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए अतिरिक्त बिंदु (लेखन हेतु सुझाव):

- **नैतिक पूँजी (Moral Capital):** वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धी दुनिया में, बिल्सी का जैन समाज अपनी 'नैतिक पूँजी' (ईमानदारी और अहिंसा) के माध्यम से अपनी व्यापारिक साख कैसे बनाए रखता है।
- **सांस्कृतिक स्थिरता बनाम परिवर्तन:** बिल्सी जैसे छोटे नगरों में वैश्वीकरण 'ग्लोकलाइजेशन' (Glocalization) के रूप में कार्य करता है, जहाँ समुदाय वैश्विक उपकरणों (जैसे सोशल मीडिया) का उपयोग अपनी धार्मिक पहचान को और अधिक प्रचारित करने के लिए करता है।

2. साहित्य की समीक्षा (Review of Literature)

अनेक विद्वानों ने जैन धर्म का दार्शनिक, नैतिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परीक्षण किया है, जो इस अध्ययन के लिए आधार प्रदान करते हैं:

- **पद्मनाभ जैनी (1979):** इन्होंने जैन नैतिक अनुशासन और तपस्या (Asceticism) को भारतीय धार्मिक परंपराओं में एक अद्वितीय योगदान के रूप में रेखांकित किया है।
- **पॉल डंडास (2002):** इन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि जैन धर्म अपनी सैद्धांतिक निरंतरता बनाए रखते हुए भी समय के साथ अनुकूलन (Adaptability) करने की अद्भुत क्षमता रखता है।
- **विलायत राज जैन (2011):** इन्होंने 'जैन पारिस्थितिकी' (Jain Ecology) और पर्यावरणीय संधारणीयता (Sustainability) के संदर्भ में इसकी प्रासंगिक चर्चा की है।
- **एन.के. सिंघी (1998):** समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सिंघी ने जैन धर्म को एक ऐसी मूल्य प्रणाली के रूप में देखा है जो आधुनिक सामाजिक-आर्थिक जीवन के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

शोध अंतराल (Research Gap): उपरोक्त विद्वानों के व्यापक कार्यों के बावजूद, छोटे शहरों (Small-towns) के जैन समुदायों और वैश्वीकरण के प्रति उनकी प्रतिक्रिया पर समाजशास्त्रीय शोध सीमित है। प्रस्तुत अध्ययन **बिल्सी (बदायूँ)** के एक स्थानीय 'केस स्टडी' के माध्यम से इसी अंतराल को भरने का एक विनम्र प्रयास है।

3. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों पर केंद्रित है:

1. **दार्शनिक प्रासंगिकता का परीक्षण:** वैश्वीकरण के वर्तमान युग में जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों (अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद) की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
2. **सामाजिक-धार्मिक जीवन का अध्ययन:** बिल्सी नगर के जैन समुदाय के सामाजिक और धार्मिक जीवन के विविध पहलुओं का गहन अध्ययन करना।
3. **वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण:** यह विश्लेषण करना कि वैश्वीकरण किस प्रकार बिल्सी के जैन समाज की धार्मिक प्रथाओं और उनकी पहचान (Identity) को प्रभावित कर रहा है।
4. **सामाजिक समरसता में योगदान:** सामाजिक समरसता, नैतिक जीवन और सामुदायिक बंधुत्व को बनाए रखने में जैन मूल्यों के योगदान को समझना।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध की प्रकृति **गुणात्मक (Qualitative)** और **वर्णनात्मक (Descriptive)** है। यह अध्ययन सामाजिक यथार्थ को सांख्यिकीय आंकड़ों के बजाय 'गहन विवरण' (Thick Description) के माध्यम से समझने का प्रयास करता है।

4.1 शोध का स्वरूप (Research Design)

अध्ययन के लिए **'केस स्टडी' (Case Study)** विधि का चयन किया गया है। समाजशास्त्रीय शोध में केस स्टडी विधि किसी विशिष्ट इकाई (जैसे बिल्सी का जैन समाज) के जीवन चक्र, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक परिवर्तनों के सूक्ष्म विश्लेषण की अनुमति देती है। यह विधि वैश्वीकरण जैसे व्यापक प्रभावों को स्थानीय स्तर पर मापने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

4.2 डेटा के स्रोत (Sources of Data)

शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का समन्वय (Triangulation) किया गया है:

क) प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):

- **अप्रतिबंधित अंतःक्रिया (Informal Interactions):** शोधकर्ता ने बिल्सी नगर के विभिन्न आयु वर्ग के जैन सदस्यों (युवा, वृद्ध, महिला और व्यवसायी) के साथ अनौपचारिक चर्चाएँ की हैं। यह विधि उत्तरदाताओं के स्वाभाविक विचारों को जानने में सहायक होती है।

- **सहभागी एवं असहभागी अवलोकन (Observation):** धार्मिक उत्सवों (जैसे महावीर जयंती, पर्युषण पर्व) और दैनिक धार्मिक गतिविधियों (मंदिर चर्या, सामूहिक भोज) का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया है। इससे यह समझने में मदद मिली कि वैश्विक संस्कृति के बीच भी पारंपरिक मूल्यों का पालन किस सीमा तक हो रहा है।

ख) द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):

- **अकादमिक साहित्य:** जैन दर्शन, समाजशास्त्र और वैश्वीकरण पर आधारित मानक पुस्तकें, शोध लेख और प्रतिष्ठित जर्नल्स।

- **आधिकारिक दस्तावेज़:** भारत की जनगणना (Census Data) के आंकड़े, जिला सांख्यिकीय पत्रिका (बदायूँ), और नगर पालिका परिषद, बिल्सी के रिकॉर्ड।

- **धार्मिक एवं स्थानीय प्रकाशन:** स्थानीय जैन सभा की निर्देशिकाएं, समाचार पत्रों की रिपोर्ट और धार्मिक पत्रक।

4.3 समाजशास्त्रीय निर्वचन (Sociological Interpretation)

एकत्रित डेटा का विश्लेषण **'प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद' (Symbolic Interactionism)** और **'प्रकार्यवाद' (Functionalism)** के सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। इसमें यह देखा गया है कि धार्मिक क्रियाएं (जैसे सामायिक या प्रतिक्रमण) आधुनिक समय में समुदाय की एकजुटता बनाए रखने में क्या भूमिका निभाती हैं।

4.4 अध्ययन का क्षेत्र (Universe of Study)

अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बदायूँ जनपद का **बिल्सी नगर** है। यहाँ का जैन समुदाय अपनी आर्थिक संपन्नता के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक रूढ़िवादिता (Positive Conservatism) के लिए भी जाना जाता है, जो इसे समाजशास्त्रीय शोध के लिए एक रोचक विषय बनाता है।

5. बिल्सी का जैन समाज: एक संक्षिप्त समाजशास्त्रीय रूपरेखा (A Brief Sociological Profile)

उत्तर प्रदेश के बदायूँ जनपद में स्थित **बिल्सी** एक ऐतिहासिक और व्यापारिक नगर है। यहाँ का जैन समुदाय संख्यात्मक दृष्टि से अल्पसंख्यक होने के बावजूद सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यंत सुदृढ़ एवं प्रभावशाली है।

5.1 सामाजिक एकजुटता और संरचना (Social Cohesion)

बिल्सी का जैन समाज **'सामाजिक एकजुटता'** का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यहाँ 'यांत्रिक सुदृढ़ता' (Mechanical Solidarity) के तत्व दिखाई देते हैं, जहाँ साझा धार्मिक विश्वास और सामूहिक चेतना (Collective Conscience) लोगों को एक सूत्र में पिरोती है।

- **सामुदायिक संगठन:** नगर में स्थानीय 'जैन सभा' और विभिन्न ट्रस्ट सक्रिय हैं, जो न केवल धार्मिक आयोजनों का प्रबंधन करते हैं, बल्कि समुदाय के आंतरिक विवादों के समाधान और कल्याणकारी कार्यों में भी भूमिका निभाते हैं।

5.2 आर्थिक प्रतिमान (Economic Patterns)

इस समुदाय की आर्थिक पहचान मुख्य रूप से **व्यापार और व्यवसाय** से जुड़ी है।

- **व्यवसाय और नैतिकता:** बिल्सी के जैन व्यवसायी अनाज मंडी, आभूषण व्यवसाय और अन्य खुदरा व्यापार में अग्रणी हैं। वैश्वीकरण के दौर में जहाँ गलाकाट प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, यहाँ का समुदाय आज भी व्यापारिक नैतिकता (Business Ethics) और आपसी विश्वास (Mutual Trust) पर आधारित लेन-देन को प्राथमिकता देता है।

- **व्यावसायिक गतिशीलता:** हाल के वर्षों में युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा प्राप्त कर चिकित्सा, इंजीनियरिंग और प्रशासनिक सेवाओं जैसे पेशेवर व्यवसायों की ओर भी आकर्षित हुई है, जिससे समुदाय की सामाजिक स्थिति और अधिक सुदृढ़ हुई है।

5.3 मंदिर: सामाजिक और नैतिक केंद्र (The Mandir as a Social Hub)

बिल्सी में स्थित जैन मंदिर केवल उपासना स्थल नहीं हैं, बल्कि वे **'सामाजिक अंतःक्रिया'** (Social Interaction) के जीवंत केंद्र हैं।

- **धार्मिक पाठशालाएं:** मंदिरों के माध्यम से बच्चों और युवाओं को नैतिक शिक्षा दी जाती है, जो वैश्वीकरण के भौतिकवादी प्रभावों को संतुलित करने का कार्य करती है।
- **पर्व और उत्सव:** महावीर जयंती और पर्युषण पर्व जैसे अवसरों पर सामूहिक भोज और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो समुदाय की पहचान को और अधिक प्रगाढ़ बनाते हैं।

5.4 परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

बिल्सी का जैन समाज डिजिटल मीडिया और बदलती जीवनशैली (Modern Lifestyles) जैसे आधुनिक प्रभावों से अछूता नहीं है, किंतु यहाँ **'सांस्कृतिक निरंतरता'** (Cultural Continuity) प्रभावी है।

- **धार्मिक अनुशासन:** डिजिटल युग के बावजूद, जैन समाज के लोग अपनी पारंपरिक भोजन चर्या, रात्रि भोजन त्याग और विशिष्ट अनुष्ठानों का कड़ाई से पालन करते हैं।
- **परोपकार और दान (Charity):** समुदाय द्वारा संचालित औषधालय और गौशालाएं उनके 'जीव दया' और 'परोपकार' के मूल्यों को दर्शाती हैं, जो वैश्वीकरण के आत्म-केंद्रित दृष्टिकोण के विपरीत है।

6. जैन धर्म के मूल सिद्धांत और वैश्विक प्रासंगिकता

जैन दर्शन के तीन प्रमुख स्तंभ आधुनिक वैश्विक संकटों के लिए समाजशास्त्रीय समाधान प्रस्तुत करते हैं:

- **6.1 अहिंसा (Non-Violence):** वैश्वीकरण के दौर में जहाँ संघर्ष और पारिस्थितिक असंतुलन बढ़ा है, जैन अहिंसा 'मनसा, वाचा, कर्मणा' के माध्यम से वैश्विक शांति का आधार बनती है। शाकाहार और जीव-दया के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आधुनिक **'संधारणीय जीवन शैली' (Sustainable Lifestyle)** का प्राचीन मॉडल है।

- **6.2 अनेकांतवाद (Non-Absolutism):** वैचारिक कट्टरता और सांस्कृतिक संघर्षों के युग में 'अनेकांतवाद' संवाद (Dialogue) और बहुलतावाद (Pluralism) को प्रोत्साहित करता है। यह सिद्धांत सिखाता है कि सत्य के कई पहलू हो सकते हैं, जो वैश्विक लोकतंत्र के लिए अनिवार्य है।

- **6.3 अपरिग्रह (Non-Possessiveness):** अति-उपभोक्तावाद के विरुद्ध 'अपरिग्रह' न्यूनतमवाद (Minimalism) की वकालत करता है। यह 'लालच' के बजाय 'जरूरत' आधारित अर्थव्यवस्था पर बल देता है, जो जलवायु परिवर्तन और आर्थिक असमानता को कम करने में सहायक है।

7. जैन धर्म और वैश्वीकरण: अंतःक्रिया और अनुकूलन

बिल्सी के जैन समाज ने वैश्वीकरण को एक खतरे के बजाय एक अवसर के रूप में देखा है:

- **शिक्षा और गतिशीलता:** युवा पीढ़ी अब केवल पारंपरिक व्यापार तक सीमित नहीं है; वे उच्च शिक्षा हेतु बाहर जा रहे हैं, जिससे समुदाय का बौद्धिक विस्तार हो रहा है।

- **तकनीकी एकीकरण:** धार्मिक शिक्षा अब 'डिजिटल पाठशालाओं' और 'सत्संग ऐप्स' के माध्यम से दी जा रही है। यह **'डिजिटल धर्म'** का एक नया समाजशास्त्रीय स्वरूप है।

- **पहचान का संरक्षण:** वैश्विक प्रभावों के बावजूद, बिल्सी का जैन समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखते हुए केवल उन्हीं आधुनिक तत्वों को अपना रहा है जो उनके धर्म के विरुद्ध नहीं हैं।

8. जैन समुदाय का सामाजिक एवं नैतिक योगदान

बिल्सी के स्थानीय परिवेश में जैन समुदाय 'सामाजिक गोंद' (Social Glue) की तरह कार्य करता है:

- **परोपकार (Dāna):** औषधालयों, पाठशालाओं और गौशालाओं के माध्यम से किया जाने वाला 'दान' सामाजिक सुरक्षा तंत्र को मजबूत करता है।
- **नैतिक व्यापार:** ईमानदारी और नैतिकता पर आधारित व्यापारिक पद्धतियां स्थानीय अर्थव्यवस्था में विश्वास (Trust) पैदा करती हैं।
- **सांप्रदायिक सद्भाव:** बिल्सी जैसे विविधतापूर्ण नगर में जैन समुदाय अपनी शांतिप्रिय छवि के कारण विभिन्न धर्मों के बीच सेतु का कार्य करता है।

9. अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष (Findings)

1. **सार्वभौमिक प्रासंगिकता:** जैन धर्म के नैतिक सिद्धांत वैश्वीकरण की विसंगतियों (जैसे अनियंत्रित उपभोक्तावाद) का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करते हैं।
2. **पहचान की निरंतरता:** बिल्सी के जैन समाज ने अपनी विशिष्ट धार्मिक पहचान और परंपराओं को वैश्वीकरण के दबाव में खोने नहीं दिया है।
3. **सकारात्मक योगदान:** समुदाय के मूल्य पर्यावरण जागरूकता, सामाजिक समरसता और नैतिक जीवन को बढ़ावा देने में सफल रहे हैं।
4. **अभिव्यक्ति में परिवर्तन:** वैश्वीकरण ने धार्मिक क्रियाओं के 'तरीकों' (जैसे सूचना तंत्र) को बदला है, लेकिन 'मूल विश्वासों' को नहीं।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण के इस चुनौतीपूर्ण युग में जैन धर्म की महत्ता न केवल अक्षुण्ण है, बल्कि और अधिक प्रासंगिक होकर उभरी है। इसके शाश्वत सिद्धांत–अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह–समकालीन वैश्विक समस्याओं जैसे हिंसा, वैचारिक कट्टरता, पर्यावरणीय क्षरण और अनियंत्रित भौतिकतावाद के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। उत्तर प्रदेश के बदायूँ जनपद स्थित **बिल्सी नगर का जैन समाज** इस तथ्य का जीवंत उदाहरण है कि किस प्रकार एक लघु धार्मिक समुदाय अपनी सांस्कृतिक निरंतरता (Cultural Continuity) को बनाए रखते हुए वैश्विक परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है। यह समुदाय दर्शाता है कि वैश्वीकरण का अर्थ अनिवार्य रूप से

'सांस्कृतिक विलोपन' नहीं है, बल्कि यदि नैतिक जड़ें मजबूत हों, तो यह 'सांस्कृतिक सुदृढ़ीकरण' का माध्यम भी बन सकता है। अतः, निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जैन धर्म केवल एक प्राचीन धर्म मात्र नहीं है, बल्कि एक जीवंत और गतिशील नैतिक परंपरा (Living Ethical Tradition) है, जिसकी वैश्विक प्रासंगिकता निर्विवाद है। बिल्सी जैसे छोटे नगरों के सूक्ष्म-अध्ययन यह सिद्ध करते हैं कि वैश्विक शांति और संधारणीय विकास का मार्ग इन्हीं स्थानीय मूल्यों और प्राचीन प्रज्ञा (Ancient Wisdom) से होकर गुजरता है।

References

1. Dundas, P. (2002). The Jains. Routledge, London.
2. Jaini, P. S. (1979). The Jaina Path of Purification. University of California Press.
3. Jain, V. R. (2011). Jainism and Ecology. Bharatiya Vidya Bhavan.
4. Singhi, N. K. (1998). Studies in Jainism and Indian Culture.
5. Census of India (2011). District Census Handbook: Budaun.
6. Sangave, V. A. (2001). Aspects of Jain Religion. Popular Prakashan.